दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास
उच्च शिक्षा और शोध संस्थान
दूरस्थ शिक्षा निदेशालय

दिनांकः 04.06.2015

Time: 10.00 am to 01.00 pm **बी.ए., (तृतीय वर्ष)** **पूर्णांकः75**

हिन्दी : (वैकल्पिक) प्रश्न पत्र-1

आधुनिक हिन्दी गद्य

I. निम्नलिखित में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए। 3x10=30

1. हिन्दी निबंध साहित्य के उद्‌भव एवं विकास पर चर्चा कीजिए।
2. हिन्दी कहानी की परिभाषा देते हुए कहानी के प्रमुख तत्वों पर प्रकाश डालिए।
3. रेखाचित्र के अर्थ और स्वरूप को स्पष्ट कीजिए।
4. हिन्दी के हास्य – व्यंग्य लेखन के विकास पर चर्चा कीजिए।
5. यात्रा साहित्य का परिचय देते हुए उसके स्वरूप को स्पष्ट कीजिए।

II. निम्नलिखित में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए। 4x5=20

1. साहित्य में समाज किस प्रकार प्रतिबिंबित होता है? समझाइए।
2. 'गुंडा' कहानी की शीर्षक की सार्थकता पर प्रकाश डालिए।
3. तत्वों के आधार पर 'पूस की रात' कहानी का विश्लेषण कीजिए।
4. 'चीफ की दावत' कहानी का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।
5. 'गर्मियों के दिन' – शीर्षक की सार्थकता स्पष्ट कीजिए।
6. राजनीति तथा धर्म के बारे में कबीर के विचार स्पष्ट कीजिए।
7. 'भोलाराम का जीव' कहानी का कथा सार लिखिए।
8. यात्रा वृत्तांत एवं संस्मरण के अंतर को स्पष्ट कीजिए।

III. निम्नलिखित गद्यांशों की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए। 5x5=25

1. ''मैं मर सकता हूँ। पहले महारानी को डोंगी पर बिठाईए। नीचे दूसरी डोंगी पर अच्छे मल्लाह हैं। फिर बात कीजिए।''

अथवा

''ला दे दे, गला तो छूटे। कंबल के लिए कोई दूसरा उपाय सोचूँगा।''

2. ''जब मेहमान बैठ गये और माँ पर से सब की आँखे हट गयीं, तो माँ धीरे से कुर्सी पर से उठीं और सबसे नज़रें बचाती हुई अपनी कोठरी में चली गयीं।''

अथवा

''गँवई गाँव के वैध्य और वकील एक ही होते है।''

3. ''किन्तु महाराज! आप जिस समाज की कल्पना करते हैं, वह तो सन्यासियों के समाज जैसा लगता है। तो क्या सन्यासी भी समाज चला सकते है ?''

अथवा

''साधुओं की वीणा तो बड़ी पवित्र होती है।''

4. ''जनाब, अपना बोरिया -बिस्तर समेटिए और जरा चलते-फिरते नजर आइए।''

अथवा

''सूर्य का गोला पानी की सतह से छू गया। पानी पर दूर तक सोना–ही–सोना दुल आया। पर वह रंग इतनी जल्दी–जल्दी बदल रहा था कि किसी एक क्षण के लिए उसे एक नाम दे सकना असंभव था।''

5. ''एक पुरुष के अन्याय की कल्पना से ही सारा पुरुष समाज उस स्त्री से प्रतिशोध लेने पर उतारु हो जाता है।''

अथवा

''श्रृंगार के असंख्य अभूतपूर्व साधनों से भरी बीसवीं शताब्दी में भी स्त्री के लिए इतनी तुच्छ वस्तु दुर्लभ है। उसके दुर्भाग्य को कौनसा नाम दिया जावे।''